VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(28 September 2023)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- अमेरिका में अमेजन पर अवैध 'एकाधिकारवादी व्यवस्था' अपनाने का आरोप
- 2050 तक भारत की आबादी में 20 प्रतिशत आबादी वृद्धों और बुजुर्गों की होगी: UNFPA
- 'जलवायु परिवर्तन के प्रति बहु-सहिष्णुता वाले बीज गेम-चेंजर साबित होंगे'

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

अमेरिका में अमेजन पर अवैध 'एकाधिकारवादी व्यवस्था' अपनाने का आरोप:

अमेजन पर मुकदमा क्यों किया गया है?

- अमेरिका के **'संघीय व्यापार आयोग (FTC)' ने ऑनलाइन खुदरा दिग्गज अमेजन के खिलाफ एक बहुप्रतीक्षित मुकदमा दायर किया** है।

- मुकदमे में आरोप लगाया गया है कि **कंपनी अपने एकाधिकार को अवैध रूप से बनाए रखने के लिए दंडात्मक और बलात रणनीति का उपयोग करती है** - और **अपने ग्राहकों के लिए कीमतें बढ़ाने और सेवा की गुणवत्ता को घटाते हुए खुद को लाभ पहुंचाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करती** है।

- इसे हाल के वर्षों में किसी बड़ी टेक कंपनी के खिलाफ FTC द्वारा शुरू किया गया सबसे हाई-प्रोफाइल मामला माना जा रहा है।
- उल्लेखनीय है कि FTC द्वारा लगाए गए कुछ आरोपों की जांच पहले ही भारत की प्रतिस्पर्धा निगरानी संस्था, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) द्वारा की जा चुकी है।

अमेजन के खिलाफ आरोप क्या है?

- FTC द्वारा अमेज़ॅन दायर पर मुकदमे में आरोप लगाया गया है कि कंपनी की कार्रवाइयां प्रतिद्वंद्वियों और विक्रेताओं को कीमतें कम करने से रोकती हैं, खरीदारों के लिए गुणवत्ता को कम करती हैं, विक्रेताओं से अधिक शुल्क लेती हैं, नवाचार को दबाती हैं और प्रतिद्वंद्वियों को अमेजन के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने से रोकती हैं।
- शिकायत में आरोप लगाया गया है कि अमेज़ॅन कानून का उल्लंघन इसलिए नहीं करता है क्योंकि यह बड़ा है, बल्कि इसलिए कि यह "बहिष्करणीय आचरण" के व्यवहार में संलग्न है जो वर्तमान प्रतिस्पर्धियों को बढ़ने और नए प्रतिस्पर्धियों को उभरने से रोकता है।
- इसमें कहा गया है कि अमेज़ॅन का प्रतिस्पर्धा-विरोधी आचरण दो बाजारों में होता है: ऑनलाइन सुपरस्टोर बाजार जो खरीदारों को सेवा प्रदान करता है और विक्रेताओं द्वारा खरीदी गई ऑनलाइन मार्केटप्लेस सेवाओं के लिए बाजार।

- इन युक्तियों में छूट-विरोधी उपाय शामिल हैं जो विक्रेताओं को दंडित करते हैं और अन्य ऑनलाइन खुदरा विक्रेताओं को अमेजन से कम कीमतों की पेशकश करने से रोकते हैं, जिससे पूरे इंटरनेट में उत्पादों की कीमत अधिक रहती हैं।

अमेज़न की इन आरोपों पर प्रतिक्रिया क्या है?

- अमेज़ॅन ने कहा कि FTC ने एक "गुमराह" मुकदमा दायर किया है, जो सफल होने पर, कंपनी को उन प्रथाओं में संलग्न होने के लिए मजबूर करेगा जो "***वास्तव में उपभोक्ताओं और हमारे स्टोर में बेचने वाले कई व्यवसायों को नुकसान पहुंचाते हैं - जैसे कि उच्च कीमतों की सुविधा देना, धीमी गति की पेशकश करना या कम विश्वसनीय प्राइम शिपिंग और प्राइम को अधिक महंगा और कम सुविधाजनक बनाना***"।
- इसमें कहा गया है कि उसकी अमेज़ॅन द्वारा पूर्ति [Fulfilment by Amazon (FBA)] सेवा विक्रेताओं के लिए वैकल्पिक हैं और इसकी फीस अन्य प्रमुख तृतीय-पक्ष लॉजिस्टिक्स प्रदाताओं द्वारा पेश किए गए मानक-शिपिंग तरीकों की तुलना में औसतन 30 प्रतिशत सस्ती ह तथा अन्य दो दिवसीय शिपिंग विकल्प की तुलना में औसतन 70 प्रतिशत सस्ती है।
- अमेजॉन ने कहा कि FTC का यह आरोप कि वह किसी तरह विक्रेताओं को अपनी वैकल्पिक सेवाओं का उपयोग करने के लिए मजबूर करता है, बिल्कुल सच नहीं है। विक्रेताओं के पास

विकल्प हैं, और कई विक्रेता अन्य लॉजिस्टिक्स सेवाओं का उपयोग करके या हमारे साथ विज्ञापन न करने का विकल्प चुनकर भी हमारे स्टोर में सफल होते हैं।

भारत में इस मुकदमे की समानता:

- **2020 में, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) ने** दिल्ली व्यापार महासंघ के आरोपों के आधार पर जांच का आदेश दिया कि **अमेज़ॅन और फ्लिपकार्ट ने कम संख्या में पसंदीदा विक्रेताओं के माध्यम से कुछ फोन बेचने के लिए स्मार्टफोन निर्माताओं के साथ विशेष बिक्री समझौते में प्रवेश किया** था।
- दिल्ली व्यापार महासंघ ने यह भी **आरोप लगाया कि अमेज़ॅन और फ्लिपकार्ट ने कुछ विक्रेताओं को उच्च खोज रैंकिंग देकर और फ्लिपकार्ट के बिग बिलियन डेज़ और अमेज़ॅन के प्राइम डे जैसी प्रमुख बिक्री अवधियों के दौरान छूट के एक हिस्से के भुगतान की पेशकश करके उन्हें तरजीह दी** थी।
- उस समय, **CCI ने नोट किया कि स्मार्टफोन ब्रांडों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के बीच समझौते के कारण कुछ विक्रेताओं ने एक ही मंच पर कुछ विशेष फोन बेचे,** जो प्लेटफार्मों और इन विक्रेताओं के बीच कथित संबंधों को उजागर कर एक जांच के योग्य मामला बनाते हैं।

2050 तक भारत की आबादी में 20 प्रतिशत आबादी वृद्धों और बुजुर्गों की होगी: UNFPA

सारांश:

- भारत में **संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) ने अपनी इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023** में कहा है कि **भारत की बुजुर्ग आबादी की दशकीय वृद्धि दर 41% अनुमानित है** और **2050 तक कुल आबादी में इसकी हिस्सेदारी दोगुनी होकर 20% से अधिक होने का अनुमान** है तथा यह संभावना है कि **2046 तक, देश में बुजुर्गों की आबादी बच्चों (15 वर्ष तक की आयु) की आबादी से अधिक हो जाएगी।**

इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के प्रमुख निष्कर्ष:

- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि **भारत में 40% से अधिक बुजुर्ग सबसे गरीब वर्ग में हैं, उनमें से लगभग 18.7% बिना आय के रहते** हैं।

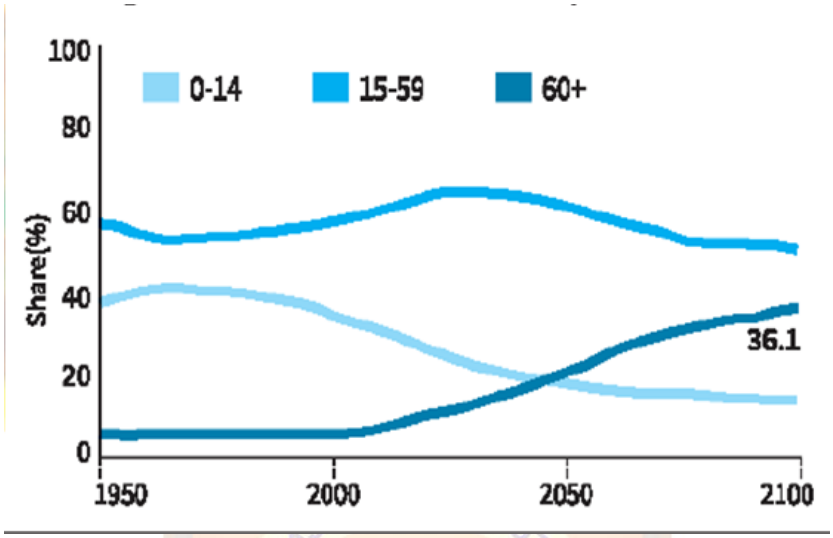

- यह रिपोर्ट बताती है कि **गरीबी के ऐसे स्तर बुजुर्गों के जीवन की गुणवत्ता और स्वास्थ्य देखभाल के क्षमता को प्रभावित कर सकती** है।
- उल्लेखनीय है कि **1 जुलाई 2022 तक भारत में 60 साल से अधिक उम्र के लोगों यानी बुजुर्गों की संख्या 14.9 करोड़ थी, जो भारत की आबादी का 10.5 फीसदी** थी।
- **2050 तक 20.8 प्रतिशत या 34.7 करोड़ भारतीय वरिष्ठ नागरिक होंगे**। सदी के अंत (2100) तक यह संख्या 36 प्रतिशत से अधिक हो जाएगी।

वृद्ध आबादी का 'स्त्रीकरण' और 'ग्रामीणीकरण':

- यह रिपोर्ट इंगित करती है कि **भारत की वृद्ध आबादी के सामने प्रमुख चुनौतियाँ इस वृद्ध आबादी का 'स्त्रीकरण' और 'ग्रामीणीकरण' हैं और नीतियों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप डिजाइन किया जाना** चाहिए।

- रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि **80 और उससे अधिक उम्र के लोगों की जनसंख्या 2022 और 2050 के बीच लगभग 279% की दर से बढ़ेगी,** जिसमें ***"विधवा और अत्यधिक आश्रित बहुत बूढी महिलाओं की प्रधानता"*** होगी - यह खोज कई देशों के पैटर्न के अनुरूप है।
- **महिलाओं में उच्च जीवन प्रत्याशा:**
  - ➢ रिपोर्ट में कहा गया है कि आंकड़ों से पता चला है कि **60 और 80 वर्ष की आयु में, पुरुषों की तुलना में औसतन महिलाओं की जीवन प्रत्याशा अधिक होती** है - **राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भिन्नता** के साथ।
  - ➢ उदाहरण के लिए, **हिमाचल प्रदेश और केरल में, 60 साल की महिलाओं की जीवन प्रत्याशा क्रमशः 23 और 22 साल है, जो इन राज्यों में 60 साल के पुरुषों की तुलना में चार साल अधिक** है। जबकि **राष्ट्रीय स्तर पर औसत अंतर सिर्फ डेढ़ साल का है।**
  - ➢ **राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, उत्तराखंड, केरल, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर जैसे राज्यों में 60 वर्ष की महिलाओं की जीवन प्रत्याशा 20 वर्ष से अधिक है,** जिससे **उनकी सामाजिक और आर्थिक भलाई के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।**

राज्यों के स्तर पर वृद्ध आबादी से जुड़े आंकड़ों की विभिन्नता:

- रिपोर्ट में कहा गया है कि **बुजुर्ग आबादी के पूर्ण स्तर और वृद्धि (और इसलिए, हिस्सेदारी) में भी एक महत्वपूर्ण अंतर-राज्य भिन्नता थी, जो राज्यों में जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों और गति को दर्शाती** है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- रिपोर्ट में कहा गया है कि **दक्षिण के अधिकांश राज्यों और हिमाचल प्रदेश और पंजाब जैसे चुनिंदा उत्तरी राज्यों में 2021 में राष्ट्रीय औसत की तुलना में बुजुर्ग आबादी की हिस्सेदारी अधिक** है, यह **अंतर 2036 तक बढ़ने की उम्मीद** है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि **बिहार और उत्तर प्रदेश सहित उच्च प्रजनन दर और जनसांख्यिकीय संक्रमण में पिछड़ने वाले राज्यों को 2021 और 2036 के बीच बुजुर्ग आबादी की हिस्सेदारी में वृद्धि देखने की उम्मीद** है, लेकिन यह **भारतीय औसत स्तर से कम रहेगा**।
- दक्षिण के राज्यों में, **वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात** (15 से 59 वर्ष के बीच प्रति 100 लोगों पर बुजुर्ग लोग) **राष्ट्रीय औसत से अधिक लगभग 20 है, वहीं पश्चिमी भारत में यह 17** है।
- जबकि **केंद्र शासित प्रदेश (13) और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (13) में कम वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात को देखा जा सकता** है।

'जलवायु परिवर्तन के प्रति बहु-सहिष्णुता वाले बीज गेम-चेंजर साबित होंगे':

संदर्भ:

- हाल ही में 'अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (ISARC)' के **वैज्ञानिक स्वाति नायक, जो जलवायु-लचीला और पौष्टिक चावल की किस्मों पर अपने शोध के लिए जानी जाती हैं**, को कृषि वैज्ञानिक और नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलॉग के सम्मान में **विश्व खाद्य पुरस्कार द्वारा दिया जाने वाला नॉर्मन बोरलॉग फील्ड पुरस्कार प्रदान किया गया।**

- **ओडिशा में स्थानीय समुदायों द्वारा प्यार से "बिहाना दीदी" (सीड लेडी) कहलाने वाली** भारतीय कृषि वैज्ञानिक **स्वाति नायक प्रतिष्ठित नॉर्मन बोरलॉग फील्ड पुरस्कार जीतने वाली तीसरी भारतीय कृषि वैज्ञानिक बन** गईं।

भारत की जरूरतों के अनुसार बीज विकास के क्षेत्र में क्या किया जाना चाहिए?

- डॉ. नायक ने **500 से अधिक जलवायु सहनशील, उच्च उपज देने वाले, जैव-फोर्टिफाइड और स्वस्थ बीज किस्मों के लिए 10,000 से अधिक ऑन-फार्म और तुलनात्मक परीक्षण का किया** था।
- अपने **शोध को छोटे किसानों के परिप्रेक्ष्य में रखते हुए, डॉ. नायक ने कहा कि पुरानी बीज किस्मों से उच्च उपज देने वाली इनब्रीडिंग (गैर-संकर) विकसित करना** और **सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर जलवायु-लचीला और जलवायु-प्रतिक्रियाशील किस्मों पर ध्यान केंद्रित करना इस दशक के नवाचार** हैं।
- डॉ. नायक **देश में पाए जाने वाले बीजों की नस्ल के संरक्षण पर भी ध्यान केंद्रित कर रही हैं।** उनका मानना है कि *"जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां निश्चित रूप से एक चिंता का विषय हैं। हमें चावल की कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाली किस्मों की आवश्यकता है जो सूक्ष्म पोषक तत्वों से युक्त हों। अगला दशक इस तरह के शोध के लिए समर्पित होना चाहिए"*।
- **पूर्वी भारत में पाए जाने वाले धान की पारंपरिक काला नमक बीज किस्म** का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि **वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दोनों उद्देश्यों के लिए अपनी इस तरह की किस्मों को संरक्षित करना होगा।**

- इसके लिए **हमें कृषक समुदाय को बेहतर गुणवत्ता वाले बीज पैदा करने और उनके जर्मप्लाज्म को बनाए रखने में मदद करने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता** है। इससे उन्हें बेहतर उपज और अनाज के बेहतर स्वाद में मदद मिलेगी।

जलवायु सहनशील फसलों की आवश्यकता:

- उन्होंने कहा कि देश भर के शोधकर्ता बीज किस्मों की विभिन्न पहुंच का मूल्यांकन करने की कोशिश कर रहे हैं। **वैज्ञानिक समुदाय का प्रयास बिना अधिक लागत, निवेश और बुनियादी ढांचे के छोटे किसानों के लिए बीजों को किफायती बनाना है। औसत उपज चिंता का विषय है, खासकर पूर्वी राज्यों के लिए। उत्पादकता बढ़ाने और स्थिर करने की अभी भी गुंजाइश** है।
- **उच्च उपज देने वाले बीज लाना और जलवायु, जैविक और अजैविक जोखिमों से लड़ना, वैज्ञानिक इस प्रक्रिया में किसानों के साथ मिलकर लड़ रहे** हैं।
- उल्लेखनीय है कि **नियमित किस्मों का स्थान लेने वाली जलवायु सहनशील किस्में एक बीमा की तरह हैं।** हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि ये किस्में किसानों के लिए सुलभ हों।
- यह मानते हुए कि **जलवायु परिवर्तन एक वास्तविकता है और कृषि पर इसके कारण होने वाले नुकसान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है**, उन्होंने कहा कि **देश में अब बहुत सारी जलवायु सहनशील किस्में हैं, जो सूखे और बाढ़ की स्थिति का सामना कर सकती हैं।**

बायो-फोर्टिफाइड खाद्यान्न की आवश्यकता:

- फोर्टिफाइड चावल पर उन्होंने कहा कि **उनकी निजी राय बायो-फोर्टिफाइड खाद्यान्न के पक्ष में है।**
- किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के दृष्टिकोण को देखते हुए, मेरा सुझाव है कि **बायो-फोर्टिफाइड चावल पोषण संबंधी चुनौती से निपटने का सबसे कम लागत वाला, गहन और किफायती तरीका है।**
- **बायो-फोर्टिफाइड चावल का उत्पादन बड़ी मात्रा में किया जा सकता है और इसमें अधिक लागत नहीं आती है।** यह **भविष्य और आगे का रास्ता हो सकता है।**
- इन **विशेष किस्मों की खेती के लिए किसानों को बाय-बैक गारंटी या प्रोत्साहन से उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा।**

नॉर्मन बोरलॉग फील्ड पुरस्कार:

- नॉर्मन बोरलॉग फील्ड पुरस्कार **नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. नॉर्मन बोरलॉग की स्मृति में विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन द्वारा 40 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को अंतर्राष्ट्रीय कृषि और खाद्य उत्पादन में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाता है।**
- यह पुरस्कार 40 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति द्वारा अंतरराष्ट्रीय कृषि और खाद्य उत्पादन में असाधारण, विज्ञान-आधारित उपलब्धि को मान्यता देता है, **जिसने वैश्विक भूख और गरीबी को खत्म करने की लड़ाई में स्पष्ट रूप से बौद्धिक साहस, सहनशक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया** है।